Godda college, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	T.C-201	Analytically concept of teaching	Pdf

P. Kumar
06/05/2020

T.C-201

Unit-3

Analytically concept of teaching
(शिक्षण का विश्लेषणात्मक अवधारणा)

छात्रों में अधिगम की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन करने का एक तरीका जो छात्रों की प्रगतियों को पहचानता है, उनका समाधान करता है और उनकी सराहना करता है।

Analytical concepts:

Four Factors that influence Each Other

Students Behaviour
- Motivation and attitude to school
- Learning strategies
- Concentration capacity
- Psychological strength

Teacher Behaviour
- ⇒ Framing of teacher
- Classroom management
- Choice of teaching and learning methods
- ⇒ Interaction with individual students
- Attention, contact, appreciation
- Support and availability

Teacher Student Relation

Class Behaviour
- Heterogeneity of student body
- Classroom culture

School Behaviour
- Pedagogical strategy
- School rules
- Conductions for teacher co-operation
- Special needs competence

Scanned with CamScanner

शिक्षण के सिद्धांत :- शिक्षण के सिद्धांतों को मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - शिक्षण के सामान्य सिद्धांत (i) शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत

शिक्षण के सामान्य सिद्धांत के अन्तर्गत निम्नलिखित हैं -

- पूर्व अनुभवों को जोड़ने का सिद्धांत
- निश्चित क्रमों का सिद्धांत
- बाल केन्द्रिता का सिद्धांत
- व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत
- वास्तविक जीवन से जोड़ने का सिद्धांत
- अभिप्रेरण सहयोग और क्रियाशीलता का सिद्धांत

(ii) शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत :-

⇒ अभिप्रेरणा एवं रुचि का सिद्धांत
⇒ आवृत्ति एवं अभ्यास का सिद्धांत
⇒ प्रतिपुष्टि और पुनर्बलन का सिद्धांत
⇒ सहयोग एवं सहानुभूति का सिद्धांत
⇒ सृजनात्मकता का पोषण सिद्धांत

शिक्षण के सूत्र - अधिगम स्तर को बढ़ाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण सूत्र इस प्रकार हैं -

- सरल से जटिल की ओर
- ज्ञात से अज्ञात की ओर
- प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर
- पूर्ण से अंश की ओर
- विशिष्ट से सामान्य की ओर
- अनुभव से तर्क की ओर

इनके साथ ही साथ कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण विधियाँ अग्रलिखित हैं -

Scanned with CamScanner

प्रमुख शिक्षण विधियाँ

आगमन विधि (Inductive Method) (प्रश्न):

⇒ आगमन विधि में अनुभवों, प्रयोगों तथा उदाहरणों का विस्तृत अध्ययन करके नियम बनाये जाते है। इस विधि द्वारा शिक्षण करते समय शिक्षक बालकों के समक्ष कुछ विशेष परिस्थितियाँ एवं उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन उदाहरणों के आधार पर बालक तार्किक ढंग से विचार-विमर्श करते हुए किसी विशेष सिद्धांत, नियम अथवा सूत्र पर पहुँचते हैं।

⇒ नियमों, सूत्रों आदि का प्रतिपादन करते समय बालक अपने अनुभवों, मानसिक शक्तियों तथा पूर्व ज्ञान का प्रयोग करता है।

⇒ यह एक सामान्य अनुमान है कि कोई बालक कुछ विशेष परिस्थितियों या उदाहरणों को देखकर या अनुभव करके उनमें पाई जाने वाली एकरूपता को निष्कर्ष के रूप में अपना लेता है। इसलिए इस विधि को सामान्यानुमान विधि (Inductive Method) कहा जाता है।

⇒ यंग (Young) के अनुसार "आगमन विधि में बालक विभिन्न स्थूल तथ्यों (Concrete facts) के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वयं किसी विशेष सिद्धांत, नियम अथवा सूत्र पर पहुँचते हैं।"

⇒ आगमन विधि द्वारा शिक्षण करते समय उदाहरणों से नियमों की ओर, विशेष से सामान्य की ओर एवं स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होते हैं।

आगमन विधि के गुण एवं विशेषतायें :-

⇒ यह एक वैज्ञानिक विधि है क्योंकि इस विधि द्वारा अर्जित ज्ञान प्रत्यक्ष तथ्यों पर आधारित होता है।

⇒ इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थाई होता है। इससे बालकों की आलोचनात्मक, निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।

⇒ यह छोटी कक्षाओं के लिए अति उपयोगी एवं उपयुक्त विधि है।

⇒ यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें मनोविज्ञान के विभिन्न सम्बन्धी सिद्धान्तों का अनुकरण किया जाता है।

⇒ बालकों को स्वयं कार्य करने की प्रेरणा मिलती है अतः उनके आत्म-निरीक्षण तथा आत्म विश्वास की वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

निगमन विधि (Deductive Method) (अरस्तू)

⇒ निगमन विधि आगमन विधि के विपरीत है। इस विधि में निगमन तर्क का प्रयोग किया जाता है।
⇒ व्यावहारिक रूप में प्रत्येक नियम अथवा सूत्र को सत्यापित करना असम्भव ही होता है।
⇒ निगमन विधि में अभिधारणाओं (Assumptions) आधारभूत तत्वों तथा स्वयंसिद्धियों (axioms) की सहायता ली जाती है।
⇒ निगमन विधि में सूक्ष्म से स्थूल की ओर, सामान्य से विशिष्ट की ओर, प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर या नियम से उदाहरण की ओर अग्रसर होते हैं।

निगमन विधि के गुण एवं विशेषताएँ :-

⇒ निगमन विधि द्वारा बालकों की स्मरण शक्ति विकसित होती है क्योंकि इस विधि का प्रयोग करते समय बालकों को अनेक सूत्र याद करने पड़ते हैं।
⇒ इस विधि द्वारा ज्ञानार्जन की गति तीव्र होती है, क्योंकि बालक समस्या हल करते समय सीधे सूत्र का प्रयोग करते हैं।
⇒ इस विधि का प्रयोग करने पर शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को कम परिश्रम करना पड़ता है।
⇒ इस विधि द्वारा कम समय में अधिक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।
⇒ इस विधि के प्रयोग से बालक अभ्यास कार्य शीघ्रता तथा आसानी से कर सकते हैं।
⇒ यह विधि संक्षिप्त होने के साथ-साथ व्यवहारिक भी है।

आगमन एवं निगमन विधि में सम्बन्ध !

⇒ यथार्थ रूप में आगमन एवं निगमन विधि एक दूसरे के पूरक हैं।
⇒ प्रारम्भ में आगमन विधि द्वारा उदाहरणों की सहायता से नियमों तथा सूत्रों का प्रतिपादन करना उसके बाद निगमन विधि द्वारा उनका उपयोग तथा अभ्यास करना चाहिए।
⇒ आगमन विधि से सूत्रों तथा नियमों को प्रतिपादित करने, तत्पश्चात निगमन विधि से आगे बढ़ने तथा अभ्यास करने की प्रक्रिया को आगमन - निगमन विधि कहते हैं।
⇒ गणित विषय संबंधी नवीन तथ्यों के लिए उपयोगी है।
[illegible]

ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic Method) (H.E. Armstrong)

→ Heuristic Method के जन्मदाता Prof. H.E. Armstrong (प्रो० एच.ई. आर्मस्ट्रांग) हैं।

→ ह्यूरिस्टिक विधि को अनुसंधान विधि या [illegible] विधि के नाम से भी जाना जाता है।

→ आर्मस्ट्रांग [illegible] प्रयोग विज्ञान शिक्षण के लिए किया गया [illegible] [illegible] उपयोगिता को देखकर इसका प्रयोग अन्य विषयों के [illegible] किया जाने लगा।

→ Heuristic शब्द ग्रीक भाषा के 'Heurisco' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है। 'मैं खोजता हूँ' ('I discover')।

→ आर्मस्ट्रांग के अनुसार [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर लिया है। इसी [illegible] के आधार पर [illegible] [illegible] की विधि को Heuristic विधि की संज्ञा दी गई।

→ इस विधि का [illegible] [illegible] छात्रों के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] करने के लिए प्रेरित करते हैं।

→ [illegible] के अनुसार "छात्रों को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिए प्रोत्साहित किया जाये।"

→ प्रो० आर्मस्ट्रांग के अनुसार "[illegible] विधि वह विधि है जिसमें [illegible] [illegible] की स्थिति में रखते हैं।"

ह्यूरिस्टिक विधि की विशेषताएँ :

→ छात्रों में सत्य के खोज को जानने की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छात्रों की [illegible] [illegible] [illegible] होती है।

→ विद्यार्थी [illegible] एवं प्रयोगों को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

→ इस विधि द्वारा विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

→ विद्यार्थी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

→ इस विधि में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

→ [illegible] [illegible] के साथ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

Scanned with CamScanner

व्याख्यान विधि (Lecture Method)

⇒ व्याख्यान विधि शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है। यह आदर्शवादी विचारधारा की देन है।

⇒ विद्यालयों एवं कॉलेजों में आज भी इस विधि का शिक्षण की दृष्टि से कम महत्व नहीं है। विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्यान विधि सबसे सरल विधि है।

⇒ वस्तुतः यह एक एकमार्गी प्रक्रिया (One-way Traffic) है ~~जिसमें~~ जिसमें अध्यापक मात्र प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल देता है।

⇒ व्याख्यान विधि पूर्ण रूप से अध्यापक - केन्द्रित विधि है तथा इसमें छात्र को स्वतन्त्र रूप से अपनी शंकाओं को दूर करने के कोई अवसर प्रदान नहीं किये जाते हैं।

⇒ यद्यपि, व्याख्यान विधि को एक अच्छी विधि नहीं माना जाता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि इस विधि की कुछ उपयोगिता नहीं है।

⇒ कम समय में पाठ्य वस्तु छात्रों के समक्ष व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत की जाती है तथा उच्च कक्षाओं में व्यापक विषयवस्तु को समाप्त/पूर्ण की जा सकती है। एवं नये पाठ प्रारंभ करने से पहले पुराने को शीघ्रता से दोहराया जा सकता है।

⇒ कुशल व्याख्यानकर्ता सदा श्रोताओं के रूख की ओर सजग रहता है और उनकी मनःस्थिति से अपना सम्बन्ध बनाये रखता है।

व्याख्यान विधि के गुण :

⇒ व्याख्यान विधि बहुत ही अल्पव्ययी है क्योंकि इसमें एक ही अध्यापक अनेकानेक छात्रों को ज्ञान प्रदान करने में सक्षम होता है।

⇒ अध्यापक एवं छात्रों को कोई विशेष श्रम नहीं करना पड़ता है।

⇒ विषय के अन्तर्गत तार्किक क्रम सुगमता से स्थापित किया जा सकता है।

⇒ तथ्यात्मक ज्ञान एवं ऐतिहासिक विवेचना हेतु सर्वोत्तम विधि है तथा उच्च कक्षाओं के छात्रों हेतु विशेष रूप से सहायक है।

⇒ यह विधि अन्य विधियों की सहायक विधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

विश्लेषण विधि (Analytic Method)

⇒ विश्लेषण विधि की सहायता से किसी भी समस्या के कठिन भाग का विश्लेषण (Analysis) करके यह ज्ञात किया जाता है कि इस समस्या का हल किस प्रकार प्राप्त किया जाये।

⇒ इस प्रकार समस्याओं के विभिन्न भागों का विच्छेदन करने को ही विश्लेषण कहते हैं। इस विधि में "अज्ञात से ज्ञात की ओर, अथवा 'निष्कर्षों से ज्ञात तथ्यों की ओर' होता है।

⇒ जटिल समस्याओं को हल करने के लिए इस विधि का ही प्रयोग करते हैं क्योंकि इसके द्वारा उस समस्या को छोटे-छोटे भागों में बाँट लेते हैं।

⇒ मुख्यतया इस विधि का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जाता है :- (i) जब किसी साध्य को हल करना हो।
(ii) कोई रचनात्मक कार्य करना हो।
(iii) नवीन समस्या को हल करना हो। आदि

विश्लेषण विधि के गुण :-

⇒ यह विधि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित होता है।

⇒ इस विधि में बालक स्वयं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हल ढूँढ़ सकता है।

⇒ इस विधि के द्वारा छात्रों में अन्वेषण करने की क्षमता और आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है।

⇒ इस विधि से छात्रों में तर्क शक्ति, विचार शक्ति तथा विश्लेषण करने की क्षमता का विकास होता है।

⇒ इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी होता है तथा छात्र नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है।

Scanned with CamScanner

265

संश्लेषण विधि (Synthetic Method)

⇒ संश्लेषण का अर्थ है अलग - अलग भागों को जोड़ना।

⇒ संश्लेषण विधि संश्लेषण क्रिया पर आधारित होता है।

⇒ इस विधि में ज्ञात से अज्ञात की ओर चलते हैं।

⇒ संश्लेषण विधि में पहले ही गई प्रमाणित सूचनाओं को एकत्र किया जाता है फिर उनको हल किया जाता है।

⇒ संश्लेषण में एक तथ्य की सत्यता की जाँच की जाती है, परन्तु इससे प्रस्तुत समस्या का वास्तविक रूप ज्ञात नहीं हो पाता है।

संश्लेषण विधि के गुण :-

⇒ समस्याओं को शीघ्रता, सफलता और सरलता से हल करने की दृष्टि से यह एक उपयुक्त विधि है।

⇒ संश्लेषण विधि द्वारा थोड़े परिश्रम तथा समय में ही काम चल जाता है।

⇒ संश्लेषण विधि में अध्यापक चिन्तनशील तथा छात्र निष्क्रिय रहते हैं।

⇒ यह एक सरल विधि है।

⇒ इस विधि में बालकों को मानसिक शक्ति के उपयोग के कोई अवसर नहीं मिलते हैं।

⇒ संश्लेषण विधि द्वारा छात्रों में रटने की आदत पड़ जाती है।

⇒ संश्लेषण विधि द्वारा प्रस्तुत हल संक्षिप्त, क्रमबद्ध तथा सरलता से समझा जा सकता है।